भारत रूस व्यापार सम्मेलन में प्रधानमंत्री का भाषण

5 दिसम्बर, 2005
मास्को

आज आपके बीच उपस्थित होकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ। मुझे खुशी है कि भारतीय व्यापार तथा उद्योग जगत के वरिष्ठ प्रतिनिधियों के लिए इस अवसर का सृजन किया गया है ताकि वे रूसी प्रतिनिधियों से मिल सकें। मैं आशा करता हूँ कि आपके विचार-विमर्शों से हमारे आर्थिक और व्यावसायिक सम्बंधों को अत्यधिक बढ़ावा मिलेगा।

भारत और रूस के बीच सभी प्रमुख मुद्दों पर घनिष्ट राजनैतिक समझ-बूझ और विचारों की एकरूपता रही है। यह सम्बन्ध समय की कसौटी पर खरा उतरा है। हमारे आर्थिक सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के लिए सरकारों द्वारा व्यापार और उद्योग जगत को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। विगत में हमारे दोनों देशों के निजी उद्यमों के बीच सीधा सम्पर्क काफी कम रहा है लेकिन सरकार तथा राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों की भागीदारी अधिक रही है।

अब वैश्विक और द्विपक्षीय माहौल बदल गया है। भारत और रूस की अर्थव्यवस्थाओं ने हाल के वर्षों में लगभग 7 प्रतिशत की दर से सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर्ज की है। दोनों अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि के नए महत्वपूर्ण क्षेत्र उभरकर सामने आए हैं और द्विपक्षीय सहयोग के नए क्षेत्र खुले हैं। दोनों अर्थव्यवस्थाओं में संरचनात्मक सुधारों और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति ने हमारे दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं को मजबूती और क्षमता प्रदान की हैं जिसका हमें आपसी लाभ के लिए उपयोग करना चाहिए।

भारतीय फर्म गुणवत्ता और परिणाम के मामले में वैश्विक स्तर हासिल कर रही हैं। भारत कृषि संबंधी सामानों से लेकर ऑटोमोबाइल कम्पोनेंट्स और उच्च साधनों से लेकर सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं तक के लिए उत्पादन आधार और निर्यात केन्द्र बन गया है। भारतीय फर्में अब आयात करने, छोटे कल-पूर्जों को जोड़ने, मूल्यांकन करने और पुनः निर्यात करने के लिए वैश्विक स्तर के उत्पादन की कड़ी बन गई हैं। विश्व भर के निगम स्वयं को भारत में स्थापित कर रहे हैं ताकि वे विनिर्माण और सेवाई क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली वैज्ञानिक प्रतिभा और कार्यबल के एक बड़े वर्ग का लाभ उठा सकें।

मैं इस तथ्य का उल्लेख करना चाहूँगा कि भारत की सफलता के अनेक क्षेत्रों में रूस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विशेषकर अपनी आजादी के प्रारंभिक वर्षों में हमने अपने आधारभूत ढांचे का निर्माण करने और भारी उद्योगों को स्थापित करने में सोवियत संघ से महत्वपूर्ण मदद प्राप्त की है। हम अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण इस्तेमाल सहित अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रगति करने हेतु रूसी वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय सहायता के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

दीर्घकालिक, समय की कसौटी पर खरा और बहुउद्देशीय द्विपक्षीय गठबंधन वह सुदृढ़ आधार है जिस पर भविष्य में एक मजबूत तथा और विविध आर्थिक सहयोग की इमारत खड़ी हो सकती है। हमें अपने आर्थिक सहयोग को नवजीवन प्रदान करने के लिए समन्वित प्रयास करने की जरूरत है और इसे बाजार की शक्तियों के साथ एकीकृत करने की भी जरूरत है। यद्यपि, अन्य देशों के साथ सम्बंध बढ़ाने की राजनीतिक जिम्मेदारी सरकारों का प्राथमिक कार्य होता है तथापि, बढ़ती हुई अनियमित अर्थव्यवस्थाएं, निजी क्षेत्र की सक्रियता और वैश्विकरण के इस युग में व्यावसायियों के आपसी संबंध देशों के बीच आपसी वार्तालाप की सम्पूर्ण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण तत्व बन गए हैं।

हमारा द्विपक्षीय व्यापार अब तक मुख्यतः रुपया -रूबल व्यवस्थाओं के ढांचे में संचालित किया जाता रहा है, लेकिन यह आगे बढ़ रहा है और जल्द ही एक संपूर्ण बाजार निर्धारण प्रक्रिया बन जाएगा। इस समय हम भारत में रूसी निवेशों के लिए शेष रुपयों के ऋण के इस्तेमाल की अनुमति देने हेतु समझौते की दिशा में कार्य कर रहे हैं। मुझे आशा है कि इस मामले पर जल्दी ही अंतिम निर्णय ले लिया जाएगा। अब यह भारतीय और रूसी व्यापारियों पर निर्भर करेगा कि वे व्यापार और आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए अवसरों का पता लगायें और उनका लाभ उठाएं। जहां सरकारें सुविधा प्रदान करने का कार्य करेगी वहीं, व्यापारिक समुदाय को मुख्य भूमिका निभानी होगी। हमारे आंकड़ों के अनुसार 1.9 बिलियन डालर स्तर का हमारा द्विपक्षीय व्यापार और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हमारी स्ट्रेटेजिक भागीदारी दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं की क्षमता से मेल नहीं खाते हैं।

दोनों सरकारें इस विसंगति के प्रति पूरी तरह सचेत हैं। न केवल चाय, तंबाकू, कपड़ा और चमड़े जैसी परंपरागत वस्तुओं के व्यापार में आ रही गिरावट को कम करने की जरूरत है बल्कि व्यापार क्षेत्र का विस्तार करने की भी जरूरत है ताकि मूल्य संवर्धित मदों को प्रायोगिक प्रौद्योगिकियों, सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार, ऑटोमोबाइल कम्पोनेंट्स, रत्नों, जेवरातों और ऊर्जा के क्षेत्र में शामिल किया जा सके। अपने बड़े संसाधन आधार और बौद्धिक पूंजी के साथ भारत और रूस को एक क्षेत्रीय और वैश्विक आधार पर मांगों को पूरा करने हेतु अवसरों का पता लगाने में साथ मिलकर काम करना चाहिए।

बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि के लिए अपेक्षित ढांचा प्रदान कर सकते हैं। इससे व्यापारी समुदायों का अपेक्षित आत्म-विश्वास भी बढ़ेगा। दोनों देशों का एक दूसरे के यहां बैंकों की शाखाएं और प्रतिनिधि कार्यालय खोलना एक सकारात्मक पहलू है। ऋण की सीमाएं बढ़ाने से भी व्यापार में वृद्धि करने का आवश्यक साधन उपलब्ध होता है। भारत-रूसी परियोजनाओं का संयुक्त वित्त-पोषण और वित्तीय संस्थाओं के बीच आपसी संबंधों का विकास, भावी वृद्धि के लिए मार्ग-प्रदर्शन है।

भारत और रूस की अर्थव्यवस्थाओं के पास सहयोग के स्वाभाविक क्षेत्र हैं। भारत सूचना प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना में अपने अनुभव और सुविज्ञता को बांटने के लिए तैयार है। इसके अलावा, रूस सूचना प्रौद्योगिकी उत्पाद यूरोप के जरिए आयात करने की बजाए सीधे भारत से आयात कर सकता है। नवम्बर, 2004 में राष्ट्रपति श्री पुतिन की बंगलौर यात्रा से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं पर मुख्य रूप से ध्यान केन्द्रित हुआ है। अब यह व्यापार समुदायों पर निर्भर करता है कि वे इन पहलों का लाभ उठाएं।

ऊर्जा क्षेत्र रूचि का एक प्रमुख क्षेत्र है। यद्यपि, *सखालिन-1* में उत्पादन प्रारंभ हो चुका है फिर भी, हम इस क्षेत्र में अपनी संलग्नता को विविध दिशा में बढ़ाने के इच्छुक हैं। विश्व में ऊर्जा के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक के रूप में रूस की स्थिति और भारत की ऊर्जा संसाधनों की बढ़ती हुई मांग से इस क्षेत्र में दोनों देशों के बीच एक स्वाभाविक अनुपुरकता झलकती है। ओएनजीसी, गेल, रोसनेफ्ट और गाजफ्राम के बीच बातचीत धीरे-धीरे गति पकड़ रही है और हम आशा करते है कि जल्दी ही ठोस नतीजे निकलेंगे। भारत और रूस की तेल और गैस कम्पनियों को अपने संयुक्त प्रयासों का तीसरे देशों तक विस्तार करने पर विचार करना चाहिए।

हमारी सरकार आधारभूत ढांचे के विकास पर विशेष जोर दे रही है— शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के आधारभूत ढांचे के विकास पर। हमने राजमार्गों, पत्तनों और विमान पत्तन सुविधाओं के निर्माण और उन्नयन तथा नए महानगरों (मेट्रो) के निर्माण के लिए महत्वाकांक्षी परियोजनाएं प्रारंभ की हैं। संबंधित क्षेत्रों में सुविज्ञता के साथ और अधिक रूसी फर्मों को भारत में परियोजनाओं में अवश्य भाग लेना चाहिए।

मास्को में हाल ही में हुए इंडो-रशियन इंटर-गवर्नमेंटल कमिशन के ग्यारहवें सत्र में दोनों पक्षों ने देखा कि भारत और रूस की अर्थव्यवस्थाओं की सक्रिय वृद्धि ने द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग के लिए अपार संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं। इन्होंने द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स, अंतरिक्ष, जैव प्रौद्योगिकी, नेनो टेक्नोलॉजी, मशीनरी और उपकरण, विमानन, जहाज निर्माण, पर्यटन, धातु विज्ञान, तेल और गैस, हाइड्रो और थर्मल पावर, कोयला, नागरिक परमाणु ऊर्जा तथा अन्य अवसंरचना और उच्च तकनीक क्षेत्रों सहित विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान की गई। इन क्षेत्रों में सहयोग को संयुक्त प्रयासों के जरिए आगे बढ़ाया जा सकता है। समूह ने इसे शीघ्र ही अंतिम रूप देने और एक उदार वीजा व्यवस्था पर हस्ताक्षर करने की बात कही। इस प्रकार के समझौते पर शीघ्र निर्णय लेने से दोनों देशों के बीच वाणिज्यिक संबंध बढ़ाने में मदद मिलेगी। इतना ही नहीं, यह अनिवार्य है कि रूस और भारत के व्यापारीगण नियमित बातचीत जारी रखें ताकि उभरते हुए अवसरों का लाभ उठाया जा सके और उनके व्यापार के विस्तार के लिए परियोजनाएं चलाई जा सकें।

भारत-रूस आर्थिक सहयोग का विस्तार बहुपक्षीय मंच तक हो चुका है। दोनों देश नियमों पर आधारित, भेदभाव रहित बहुपक्षीय संस्थाओं को सुदृढ़ बनाने का समर्थन करते हैं और उसी संदर्भ में, भारत विश्व व्यापार संगठन रूस के प्रवेश का समर्थन करता है।

भारत और रूस के बीच कई दशकों से दोस्ती और सहयोग का अद्वितीय गठबंधन विकसित हुआ है। हमारे साझे राजनैतिक लक्ष्य स्ट्रेटेजिक हितों की सहभागिता और हमारे सांस्कृतिक संबंध, हमारे स्ट्रेटेजिक सहयोग की नींव के पत्थर रहे हैं। एक बहुमुखी आर्थिक सहयोग हमारे परंपरागत घनिष्ट संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाएगा। एक स्थाई और सुदृढ़ आर्थिक भागीदारी के लिए व्यापारी समुदाय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मैं आपके विचार-विमर्शों की सफलता की कामना करता हूँ।